eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर का समाज चिन्तन

[1]डॉ0 अंकिता कनौजिया
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, पं0 दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, तिलहर शाहजहाँपुर

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

समाज में जब किसी भी वास्तविक संत का प्रादुर्भाव होता है तब समाज में उस संत का प्रादुर्भाव किसी वरदान से कम नहीं होता। वे संत सभी जीवों के हित एवं कल्याण में ही अपने सम्पूर्ण जीवन को लगा देते हैं। वे हर जीव को ईश्वर का ही अंश मानते हैं। उन्हीं संतों में एक नाम है कबीरदास जी का।

बीज शब्द :– संत, कल्याण, कबीर, परोपकार, विनम्रता, समाज सुधारक।

Introduction

कबीरदास जी का जन्म 1398 ई0 में काशी के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ था। इनका पालन–पोषण जुलाहा परिवार में हुआ था। 'कबीर' अरबी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है– 'महान'। ये भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा के ज्ञानाश्रयी शाखा (संत काव्यधारा) के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। ये बड़ी प्रखर प्रतिभा के व्यक्ति थे। सर्वविदित है कि कबीरदास एक कवि बाद में परन्तु एक समाज सुधारक एवं भक्त पहले हैं। ये मूलतः भक्त थे। इन्होंने समाज के कल्याण में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। ये अत्यन्त विनम्र व्यक्ति थे। इनमें करूणा कूट–कूट कर भरी हुई थी।

वास्तविक संत समाज में कभी भी दरार डालने का कार्य नहीं करते, वे सदैव समाज को जोड़ने का कार्य करते हें। वे समाज में किसी भी प्रकार की घृणा, वैमनस्य या विसंगति फैलाने का कार्य नहीं करते। ठीक ऐसे ही कबीरदास जी ने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, छुआछूत, वाह्याडम्बर, धार्मिक वैमनस्य एवं कटुता का तीखे शब्दों में खण्डन किया। कबीरदास ने धार्मिक कुरीतियों एवं रूढ़ियों पर करारा प्रहार किया। उन्होंने कहा–

हिन्दू मूये राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, दुह में कदे न जाइ।।[1]

कबीरदास जी मानते हैं कि सभी जीव ईश्वर के अंश हैं। हर प्राणी के ह्रदय में ईश्वर का निवास है। वे मूर्तिपूजा का विरोध करते हैं क्योंकि मूर्तियाँ मनुष्य स्वयं बनाता है एवं बनाकर खुद ही पूजा करता है। कितनी हास्यास्पद बात है कि मनुष्य मूर्ति स्वयं अपने हाथों से बनाकर उस मूर्ति को भगवान मानकर धूप, अगरबत्ती इत्यादि चढ़ाकर पूजा करता है।

कबीरदास जी मानते थे कि संसार में ईश्वर एक है एवं हम सभी उसी ईश्वर के अंश हैं। वे किसी भी प्रकार के अवतारवाद को नहीं मानते। वे कहते हैं कि हमें अपने तन को नहीं बल्कि अपने

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

मन को योगी बनाना चाहिए। कबीरदास जी माला, तिलक इत्यादि वाह्याडम्बरों का भी विरोध करते हैं–

छापा तिलक बनाइ करि दगध्या लोक अनेक।

तन कौ जोगी सब कर मन को बिरला कोय।।[2]

कबीरदास जी हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म में व्याप्त अनेक कुरीतियों का खुलकर विरोध करते हैं। वे मानते हैं कि हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म में अनेक आडम्बर एवं कुरीतियों ने अपनी जडें जमा ली हैं। हिन्दू धर्म के लोगों का तीर्थयात्रा करना एवं मुस्लिम धर्म के लोगों द्वारा हज यात्रा को वे व्यर्थ मानते हैं क्योंकि उनका मानना है कि ईश्वर का निवास सभी प्राणियों के हृदय में है। वे कहते हैं–

कस्तूरी कुण्डल बसै, मृग ढूँढ़े बन मांहि।

ऐसे घटि–घटि राम हैं, दुनिया देखै नाहिं।।[3]

वे मानते हैं कि हमसे किसी भी जीव का अहित न होने पाये एवं किसी भी जीव का हृदय न दुखे। यही वास्तविक पूजा है कि हम हर जीव को ईश्वर का अंश मानते हुए उसे किसी भी प्रकार से दुःख न पहुँचायें।

कबीरदास जी ने सदैव समाज को जगाने का प्रयास किया। उन्होंने प्रेमपूर्ण व्यवहार को महत्व दिया। उन्होंने कहा कि यदि मनुष्य पोथा, पुराण इत्यादि धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने के बाद उन शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारने का प्रयास नहीं करता तो धार्मिक ग्रंथ एवं नैतिक बातें व्यर्थ हैं। वे कहते हैं–

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोई।

एकै अषिर पीव का, पढ़े सुपंडित होइ।।[4]

कबीरदास जी ने जाति प्रथा का खण्डन तीव्र स्वर में किया। इन्होंने छुआछूत, ऊँच–नीच इत्यादि सामाजिक बुराइयों पर करारा प्रहार किया। कबीरदास जी ने हिन्दू एवं मुसलमान दोनों धर्मों के कुरीतियों एवं बाह्याडम्बरों का खुलकर विरोध किया। उन्होंने दोनों धर्मों के लोगों में चेतना लाने का प्रयास किया। उन्होंने मुखर स्वर में कहा–

हिन्दू तुरक कहाँ ते आये किन एह राह चलाई।

दिल महि सोच–विचार कवादे भिस्त दोजक किन पाई।।

काजी तै कौन कतेब बखानी।

पढ़त गनत ऐसे सब मारे किनहू खबर न जानी।[5]

कबीरदास जी ने पंडितों के झूठे प्रपंच का भी खुलकर विरोध किया। उन्होंने कहा–

पंडित बाद बदंते झूठा

राम कह्यां दुनिया गति पावै, षांड कह्यां मुख मीठा।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

पावक कह्यां जे दाझै, जल कहि त्रिषा बुझाई।

भोजन कह्या पात्र भूष जे भाजै तौ सब कोई तिरि जाई।[6]

उपसंहार–

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कबीरदास मस्तमौला एवं फक्कड़ स्वभाव के थे। उन्होंने समाज को जगाने के लिए अपने स्तर से हर सम्भव प्रयास किया। कबीरदास जी के बारे में हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं– ''सहज सत्य को सहज ढंग से वर्णन करने में कबीरदास अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं जानते थे। वे मनुष्य बुद्धि को व्याहत करने वाली सभी वस्तुओ को अस्वीकार करने का अपार साहस लेकर अवतीर्ण हुए थे। पंडित, शेख, मुनि, पीर, औलिया, कुरान, पुरान, रोजा, नमाज, एकादशी, मंदिर और मस्जिद उन दिनों मनुष्य चित्त को अभिभूत कर बैठे थे, परन्तु वे कबीरदास का मार्ग न रोक सके। इसीलिए कबीर अपने युग के सबसे बड़े क्रांतदर्शी थे।''[7]

उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछूत, ऊँच–नीच, जीव हत्या, धार्मिक पाखण्ड का खुलकर विरोध किया। वे जिस मार्ग पर वे चलते रहे वह मार्ग प्रेम का था। उन्होंने सभी जीवों को ईश्वर का अंश मानकर सभी को समान बताया। उन्होंने मानवतावादी विचारधारा का प्रसार किया एवं तीव्र स्वर में सामाजिक बुराइयों पर करारा प्रहार करके समाज को जगाने का कार्य किया।

सन्दर्भ सूची–

1. श्यामसुन्दरदास, कबीर ग्रन्थावली, इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पृ0सं0 54
2. वही, पृ0सं0 46
3. वही, पृ0सं0 81
4. वही, पृ0सं0 39
5. वही, पृ0सं0 331
6. वही, पृ0सं0 101
7. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्य उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, तेइसावॉ संस्करण 2019, पृ0सं0 79